पाकिस्तान के दो बाप हैं ?

नियमानुसार किसी भी व्यक्ति का एक ही पिता हो सकता है जो उसे जन्म देता है. परन्तु अक्सर देखा जाता है कियदि कोई किसी बच्चे का नामकरण करता है,उसका पालन पोषण करता है और उसका खर्चा उठाता है तो लोग उसे उस बच्चे का पिता मान लेते हैं. इसके अनुसार पाकिस्तान के दो बाप हैं.एक जन्मदाता नाम देने वाला. दूसरा पालने वाला खर्चा उठाने वाला .

लोग भ्रमवश जिन्ना को पकिस्तान का बाप मानते हैं जैसे कि पाकिस्तानी जिन्ना को बाबाये कौम कहते हैं. भारत के लोग जिन्ना को देश के विभाजन के लिए जिम्मेदार मानते हैं. और उसे कोसते हैं

१- पाकिस्तान का पहिला बाप

वैसे जिन्ना कांग्रेसी था और उसे मजहब से कोई लेना देना नहीं था. वह न रोजा रखता था न नमाज पढ़ा था. यहाँ तक वह उर्दू भी नहीं जानता था. जिन्ना के तौर तरीके अंग्रेजों कि तरह थे. जिन्ना मशहूर बैरिस्टर था. इसलिए अपनी बात तर्क से साबित कर सकता था.

जब सन १९१६ में लखनऊ में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ था तो जिन्ना भी उसमे गया था. उस अधिवेशन में मुस्लिम लीग के लोग भी गए थे.

कांग्रेस के प्रमुख लोगों में लोकमान्य तिलक, एनी बेसेंट, श्री निवास शास्त्री, रंगनाथ खापर्डे सहित जिन्ना भी मंच पर थे.

जैसे ही जिन्ना मंच पर आये उनका स्वागत किया गया. बाद में जिन्ना ने सबके साथ वन्दे मातरम गाया |

यह सारी घटना तिलक ने अपनी डायरी में दर्ज की है, तिलक संस्कृत में निजी डायरी लिखते थे. यह पुस्तक १९७१ में पूना से छपी है | इसके सम्पादक मंडल में मुरार जी देसाई, बी ड़ी जत्ती जैसे लोग हैं. इस घटना के बारे में यह लिखा हुआ है -

पुस्तक-तिलक यशो अर्णव खंड ३ अध्याय ५५ श्लोक १०९,११५

मुम्बई स्थितो जिन्ना विद्वान् इस्लाम भूषणं

अदिवाक्ता येन बेसेंट च तिलकौ समौ-१०९

अनुक्ताश्च इतरे पूज्या व्यास पीठ विराजरे

वन्दे मातरम इत्येत संगीतम मधुरे स्वरे ११२

उस अधिवेशन में जिन्ना ने प्रांतीय सरकारों में मुसलमानों के लिए एक तिहाई सीटें मांगीं, जहां मुस्लिम आबादी बहुसंख्या में हो जिन्ना ने कुल १६ मुद्दे रखे थे. उसमे हिन्दू -मुस्लिम एकता की बात भी थी. इसपर सरोजिनी नायडू ने जिन्ना की तारीफ़ भी की थी लेकिन कुछ कान्ग्रेसिओं ने जिन्ना का मजाक उड़ाया और कहा "यह अपना अलग देश माग रहा है"| जिन्ना रुष्ट होकर वापस आ गया.

उसने कहा कि हमारा अब हिन्दुओं के साथ एक साथ रहना मुमकिन नहीं है. क्योंकि हमारी भाषा, हमारे रिवाज़, हमारा धर्म, यहाँ तक हमारा खुदा भी अलग है

उन दिनों खिलाफत आन्दोलन जोर पर था. अंगरेजों ने तुर्की के खलीफा अब्दुल हमीद सानी को गद्दी से उतार दिया था. मुसलमान खलीफा को अपना धार्मिक और राजनीतिक नेता मानते थे. हरेक मुस्लिम राजा खलीफा के नाम पर मस्जिदों में अपने नाम से यह लकब लगाते थे

सिकंदारुस्सानी यमीनुल खिलाफाते नासिरुल मौमनीन यानी दूसरे सिकंदर खलीफा का दायाँ हाथ मुसलमानों का मदद गार इसके बाद जिन्ना कट्टर होने लगा |

जब २९ दिसंबर १९३० में इलाहाबाद में मुस्लिम लीग का अधिवेशन हुआ था तो उसमे इकबाल को अध्यक्ष बनाया गया| इकबाल शायर था उसने सभामे यह शेर सुनाया, जो उसकी किताब जावेद नामा में मौजूद है - इकबाल ने कहा

हो जाए अगर शाहे खुरासांका इशारा
सजदा न करूं हिंद की नापाक जमीन पर.

वहीं से पाकिस्तान शब्द की उत्पत्ति हुई थी पकिस्तान शब्द में सात उर्दू अक्षर हैं जिन से मिलकर पाकिस्तान बन जाता है पंजाब, असम, कश्मीर, सिंध, तराई यानी जानना के ऊपर का भाग, निजाम |

इसी तरह पकिस्तान का पहिला बाप इकबाल है |

२- दूसरा बाप हम गांधी को पिता मानते हैं :

यह भूल है गांधी ने भारत को नहीं पाकिस्तान को जन्म दिया था. भारत तब भी था जब गांधी ही नहीं था, वह भारत का पिता कैसे हो सकता है ? जब पाकिस्तान बन गया तो गांधी ने पकिस्तान को ५५ करोड़ रुपया दिलवाया था और इसके लिय भूख हड़ताल भी की थी पाहिले गांधी विभाजन के विरुद्ध था और कहता था कि "**बटवारा मेरी लाश पर होगा**"| लेकिन बाद में वह बात से पलट गया और पाकिस्तान बनवा कर उसे रुपया भी दे दिया | इसलिए गांधी भारत का नहीं पाकिस्तान का दूसरा बाप है|

बी एन शर्मा